

राष्ट्रीय शिक्षण नीति અને प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीનો अભ્યાસ

સૌરભ મેહતા, મિનાક્ષી નંદુલા, ઉદય કાશીદ, રીયા મોદી

પુષ્ટિસંસ્કાર વિદ્યાપીઠ, જૂનાગઢ, ગુજરાત અને વિદ્યાલંકાર ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ટેકનોલોજી, મુંબઈ

વિદ્યાલંકાર ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ટેકનોલોજી, મુંબઈ

વિદ્યાલંકાર ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ટેકનોલોજી, મુંબઈ

વિદ્યાલંકાર ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ટેકનોલોજી, મુંબઈ

અમૂર્ત

આ પેપર પ્રાચીન ભારતીય શિક્ષણ પ્રણાલી અને ભારત સરકારની નવી શિક્ષણ નીતિ વચ્ચેની સરખામણી રજૂ કરે છે, જે 2020 થી અમલમાં આવી રહી છે (NEP 2020, Final draft, 2022). નવી નીતિ પર પ્રાચીન ભારતીય શિક્ષણ પ્રણાલીની અસર વિશે સમજ મેળવવા માટે, આ સંશોધન પેપર અપનાવવામાં આવ્યું છે. એક સૈદ્ધાંતિક અભિગમ અને તુલનાત્મક અભ્યાસ કરે છે. ત્યાર બાદ તેની નવી શિક્ષણ નીતિ પર પ્રાચીન ભારતીય શિક્ષણ પ્રણાલીમાંથી શીખવાના મુદ્દાઓની અસરના અભ્યાસના તારણો રજૂ કરવામાં આવ્યા છે. આ તારણો અસરકારક આધુનિક શૈક્ષણિક નીતિઓ પ્રસ્તાવિત કરવા અને અમલમાં મૂકવા માટે પ્રાચીન ભારતીય શિક્ષણ પ્રણાલીના અભ્યાસ પર દોરવાનું મહત્વ દર્શાવે છે.

પરિચય

આ સંશોધન પ્રાચીન ભારતીય શિક્ષણ પ્રણાલીની સ્થિતિસ્થાપકતા અને રાષ્ટ્રીય શિક્ષણ નીતિ (NEP) 2020 માટે તેની સુસંગતતા પર ધ્યાન કેન્દ્રિત કરે છે. સિસ્ટમના મુખ્ય પાસાઓમાં તેનો બહુ-શિસ્ત અભિગમ, ભાષાકીય વિવિધતા, સ્વાયત્તતા, રહેણાંક કાર્યક્રમો અને કૌશલ્ય વિકાસનો સમાવેશ થાય છે. સંશોધકો આધુનિક શિક્ષણ પ્રણાલીઓને જાણ કરીને જ્ઞાન કેવી રીતે એકબીજા સાથે જોડાયેલા અને એકીકૃત હતા તે શોધવાનું લક્ષ્ય રાખે છે. વધુમાં, તેઓ પ્રાચીન શિક્ષણમાં ભાષાકીય વિવિધતાના મહત્વને પ્રકાશિત કરે છે, જે સમકાલીન સેટિંગ્સમાં સર્વસમાવેશક શિક્ષણ વાતાવરણના વિકાસને માર્ગદર્શન આપી શકે છે.

પ્રાચીન ભારતીય શિક્ષણ પ્રણાલી:

પ્રાચીન ભારતીય શિક્ષણ પ્રણાલી તેના સર્વગ્રાહી અભિગમ માટે જાણીતી હતી, જેમાં પાઠ-સાલામાં મૂળભૂત શિક્ષણ અને ગુરુકુલોમાં અદ્યતન શિક્ષણનો સમાવેશ થાય છે. પાઠ-શાળાઓ ભાષા, ગણિત અને ઇતિહાસ જેવા વિષયોમાં પાયાનું જ્ઞાન પૂરું પાડે છે, જ્યારે ગુરુકુલો દવા, ફિલસૂફી અને સાહિત્ય જેવા ક્ષેત્રોમાં વિશિષ્ટ અભ્યાસક્રમો ઓફર કરે છે. વ્યવહારુ કૌશલ્યો અને એપ્રેન્ટિસશીપને અભ્યાસક્રમમાં એકીકૃત કરવામાં આવી હતી, જે સારી રીતે ગોળાકાર શિક્ષણને સુનિશ્ચિત કરે છે. પ્રણાલીએ વિદ્યાર્થી-કેન્દ્રિત શિક્ષણ શાસ્ત્રો, અરસપરસ શિક્ષણ અને બહુવિધ અભ્યાસક્રમ પર ભાર મૂક્યો હતો જે જટિલ વિચારસરણી અને

सर्वग्राही विकासने प्रोत्साहन आपे छे (Sukanta Kumar Naskar, et al., 2013).

वधुमां, प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीछे लगभग 64 कला स्वरूपोने मान्यता आपतां ललित कणाने महत्त्व आप्युं हतुं. चित्रकला, शिल्प, संगीत, नृत्य अने वधुने शिक्षण, सर्जनात्मकताने प्रोत्साहन आपवा अने सांस्कृतिक वारसानी जणवणी माटे अभिन्न गणवामां आवता हता. शारीरिक शिक्षण अने योग जेवी प्रेक्टिस पर पण भार मूकवामां आव्यो हतो, जेमां शारीरिक सुभाकारी अने मानसिक शिस्तना महत्त्व पर भार मूकवामां आव्यो हतो. अेकंदरे, प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीनो हेतु विविध विद्याशाखाओनी ठोडी समज अने व्यक्तिगत अने सामाजिक विकास माटे मजबूत पाया साथे सारी रीते गौणकार व्यक्तिओ विकासववानो हतो(Urmila Yadav, 2018).

केस स्टडी: शिक्षणमां प्राचीन भारतीय ज्ञानशास्त्रने समजवुं

परिचय:

आ केस स्टडी प्रामाण (ज्ञानना मान्य स्रोत), प्रतिका (प्रत्यक्ष धारणा), अनुमान (अनुमान), उपमान (सरभामणी), अर्थपति (धारणा), अनुपालब्धिनी विभावनाओ पर ध्यान केन्द्रित करीने, प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीना ज्ञानशास्त्रीय पायानो अभ्यास करे छे. (बिन्-द्रष्टि), अने सबदा (साक्षी). वधुमां, अमे ज्ञान आपवामां पुस्तको अने शिक्षकोनी भूमिकाओनुं अन्वेषण करीशुं. आ पृथक्करण द्वारा, अमारो हेतु प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीमां आ विभावनाओना महत्त्व अने आधुनिक शैक्षणिक प्रथाओ साथे तेमनी सुसंगतता समजवानो छे.

समजवती:

प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीछे ज्ञानना विविध मान्य स्रोतने मान्यता आपता प्रमानने भूष महत्त्व आप्युं हतुं. प्रत्यक्षा, प्रत्यक्ष अनुभूतिनी विभावना, विद्यार्थीओने जाते अनुभवो अने अवलोकनो द्वारा शीजवा माटे प्रोत्साहित करे छे. उदाहरण तरीके, भगोणशास्त्रना क्षेत्रमां, विद्यार्थीओ ब्रह्मांडनी ठोडी समज विकासववा माटे अवकाशी पदार्थो अने ग्रहोनी गतिविधियोनुं अवलोकन करशे. प्रत्यक्ष धारणा परना आ भारथी विद्यार्थीओने सिद्धांतने व्यवहारु अप्पिकेशनो साथे जोडवामां मडमणी, अेक व्यापक शिक्षण अनुभवने प्रोत्साहन आप्युं.

अनुमान, अनुमाननी विभावना, तार्किक तर्कमां निर्णायक भूमिका लजवे छे. विद्यार्थीओने उपलब्ध माहितीनुं विश्लेषण करवा, तार्किक जोडाणो बनाववा अने तारणो काढवानी तालीम आपवामां आवी हती. गणित अने डिलसूझी जेवा विषयोमां, विद्यार्थीओ जटिल समस्याओ उकेलवा अने अनुमानित तर्क कुशलता विकासववा अनुमानने नियुक्त करशे. आ अभिगमे निर्णायक विचारवानी क्षमताओ विकासवी अने वास्तविक-विश्वनी परिस्थितियोमां तार्किक सिद्धांतने लागु करवानी विद्यार्थीओनी क्षमताने सन्मानित करी.

उपमेन, अथवा सरभामणी, विविध घटनाओ वर्ये समानता दोरवानो समावेश करे छे. आनाथी विद्यार्थीओ पेटर्नने ओणभी शक्या, जोडाणो बनावी शक्या अने विविध विषयोनी तेमनी समजने वधु ठोडी करी शक्या. दाभला तरीके, साहित्यना अभ्यासमां, विद्यार्थीओ रिकरिंग थीम्स, साहित्यिक तर्कनीको अने सांस्कृतिक प्रभावोने ओणभवा माटे विविध ग्रंथोनी तुलना करशे. आ तुलनात्मक पृथक्करण विद्यार्थीओना परिप्रेक्ष्यने विस्तृत करे छे अने तेमनी अर्थघटन कौशल्यने समृद्ध बनावे छे.

अर्थपति, धारणानी विभावना, विद्यार्थीओने परोक्ष पुरावाना आधारे शिक्षित धारणाओ करवा सक्षम बनावे छे. ज्यारे प्रत्यक्ष पुरावानो अभाव हतो त्यारे तेमां तार्किक तर्क द्वारा तारणो काढवानो समावेश थतो हतो. इतिहास अने पुरातत्वशास्त्र जेवा क्षेत्रोमां, विद्यार्थीओ भूतकालनी घटनाओ विशे माहितगार अनुमान करवा माटे कलाकृतियो, शिलालेखो अने ऐतिहासिक हिसाबोनुं विश्लेषण करशे. आ अभिगमथी विश्लेषणात्मक विचारसरणी अने मर्यादित माहितीमांथी तार्किक तारणो काढवानी क्षमता केणवाछ.

अनुपालब्धि, बिन्-द्रष्टिनी विभावना, मानव संवेदनाओ अने अनुभूतिनी मर्यादाओने स्वीकारे छे. ते पुरावानी

गेरहाजरीने समजवा अने ज्ञानमां अंतरने ओणभवाना महत्व पर प्रकाश पाडे छे. विद्यार्थीओने धारणाओ पर प्रश्न करवा अने वैकल्पिक समजूती मेणववा माटे प्रोत्साहित करवामां आव्या हता. आ निर्णायक अभिगम बौद्धिक जिज्ञासा अने भुल्ला मननी मानसिकताने उत्तेजन आपे छे.

सभदा, अथवा जुबानी, ज्ञानना प्रसारणमां अधिकृत ग्रंथो अने शिक्षकोनी भूमिकाने मान्यता आपे छे. पुस्तकोने शाणुपणना अमूल्य स्रोत तरीके गाणवामां आवता हता, अने शिक्षकोओने विद्यार्थीओने पाठो द्वारा मार्गदर्शन आपवामां अने समजूती आपवामां केन्द्रीय भूमिका लजवी हती. शिक्षक-विद्यार्थी संबंधो भूष मूल्यवान हता, शिक्षको मार्गदर्शक अने शिक्षणनी सुविधा आपनार तरीके सेवा आपता हता. विद्यार्थीओ विविध विषयोनी ठोडी समज मेणववा माटे निष्णातो अने विद्वानोनी जुबानी पर आधार राभशे.

आ सिद्धांतोने समजवाथी हाथ परना अनुभवो, जटिल विचार कौशल्य, तुलनात्मक विश्लेषण, तार्किक कपात अने विश्वसनीय स्रोतोना उपयोग पर भार मूकीने आधुनिक शैक्षणिक प्रथाओने माहितगार करी शकय छे. आ घटकोनो समावेश विद्यार्थीओनी संलग्नतामां वधारो करी शके छे, सर्वग्राही शिक्षणने प्रोत्साहन आपी शके छे अने विविध शाखाओमां विषयोनी ठोडी समज केणवी शके छे.

NEP 2020 साथे सरभामणी

अगाऊना केस स्टडीमां यर्थां करावेली विभावनोअनुं अही तुलनात्मक विश्लेषण छे, जे राष्ट्रीय शिक्षण नीति (NEP) 2020 नी जोगवाँओ साथे प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीना ज्ञानशास्त्रीय पाया पर ध्यान केन्द्रित करे छे (Dominic Amalan et al., 2023):

1. प्रमाण अने ज्ञानना मान्य स्रोतो:

NEP 2020 ओ बहु-शाखाकीय अभिगमना महत्वने ओणभे छे, जेम के प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीओ प्रमाण पर भार मूक्यो हतो. बने प्रणालीओ विषयोनी व्यापक समज पूरी पाडवा माटे ज्ञानना विविध स्रोतोनो समावेश करवानी जरूरियातने स्वीकारे छे. NEP कला, मानवता अने विज्ञानना ऐकीकरणने प्रोत्साहन आपे छे, जेनाथी विद्यार्थीओ विविध विषयोनुं अन्वेषण करी शके अने सर्वग्राही परिप्रेक्ष्य विकसावी शके.

2. प्रतिक्षा अने प्रायोगिक शिक्षण:

NEP 2020 प्रायोगिक शिक्षण पर भार मूकीने प्रतिक्षानी विभावनो साथे संरेषित थाय छे. आ नीति अनुभवो, प्रायोगिक ऐप्लिकेशनो अने प्रोजेक्ट आधारित शिक्षणने प्रोत्साहित करे छे, जे विद्यार्थीओने वास्तविक दुनियाने सीधी रीते समजवा अने तेनी साथे जोडावा माटे सक्षम बनावे छे. आ अभिगम प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीना निरीक्षण अने प्रत्यक्ष अनुभवो द्वारा शीभववा पर भार मूके छे.

3. अनुमान अने विवेचनात्मक विचार:

प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणाली अने NEP 2020 बने जटिल विचार कौशल्योने प्रोत्साहन आपवाना महत्वने ओणभे छे. NEP अनुमानना प्राचीन भारतीय ज्यालनी जेम पूछपरछ आधारित शिक्षण, समस्यानुं निराकरण अने तार्किक तर्कने प्रोत्साहन आपे छे. विद्यार्थीओने माहितीनुं पृथक्करण करवा, जोडाणो बनाववा अने तार्किक तारणो काढवा माटे प्रोत्साहित करीने, बने सिस्टमोने हेतु विद्यार्थीओनी विवेचनात्मक अने स्वतंत्र रीते विचारवानी क्षमता विकसाववानो छे.

4. उपमेन अने तुलनात्मक विश्लेषण:

NEP 2020 विविध विद्याशाखाओना ऐकीकरण पर भार मूके छे अने बहु-शिक्षण अभिगमने प्रोत्साहित करे छे, जे उपमेनना ज्याल साथे पडघो पाडे छे. विविध विषयो वच्ये समानताओनी सरभामणी करीने अने चित्र दोरवाथी, विद्यार्थीओ व्यापक समजण केणवी शके छे अने तमाम शाखाओमां जोडाणो बनावी शके छे. आ अभिगम प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीना तुलनात्मक पृथक्करण अने ओणभना दाभलाओ पर भार मूके छे.

5. अर्थपति अने विश्लेषणात्मक विचार:

NEP 2020 ओ विश्लेषणात्मक विचारसरणी अने समस्यानुं निराकरण करवानी कुशलताने प्रोत्साहन आपे छे, जे अर्थपतिनी

प्राचीन भारतीय विभाषा जेवी जे छे. बंने सिस्टमो विद्यार्थीओने माहितीनुं विश्लेषण करवा, शिक्षित धारणाओ करवा अने तार्किक तारणो काढवा प्रोत्साहित करे छे. विश्लेषणात्मक विचारसरणीने पोषवाथी, विद्यार्थीओ व्यवस्थित अने तर्कबद्ध अभिगम साथे जटिल समस्याओनो संपर्क करी शके छे, नवीन उकेलो शोधवानी तेमनी क्षमतामां वधारो करे छे.

6. अनुपालब्धि अने भुल्ला मनः

NEP 2020 भुल्ला अने जिज्ञासु मानसिकताना विकास पर भार भूके छे, विद्यार्थीओने धारणाओ पर प्रश्न करवा अने वैकल्पिक समझती मेणववा माटे प्रोत्साहित करे छे. आ अनुपालब्धिना प्राचीन भारतीय भ्याल साथे संरेषित छे, जेणे धारणांनी मर्यादाओने मान्यता आपी हती अने विद्यार्थीओने ज्ञानमां रहेला अंतरने विवेचनात्मक रीते तपासवा माटे प्रोत्साहित कर्या हता. बंने प्रणालीओ बौद्धिक जिज्ञासा अने बहुविध परिप्रेक्ष्योनी शोध माटे निभालसताने प्रोत्साहन आपे छे.

7. सबदा अने मार्गदर्शित शिक्षणः

NEP 2020 ज्ञाननी सुविधा आपनार तरीके शिक्षकोनी भूमिकाने स्वीकारे छे, जे सबदाना प्राचीन भारतीय भ्यालनी जेम जे छे. आ नीति शीभवानी प्रक्रियामां शिक्षक-विद्यार्थी संबंधो, मार्गदर्शन अने मार्गदर्शनना महत्व पर भार भूके छे. निष्ठातनी जुबानीना मूल्यने ओणपीने अने अनुभववी शिक्षकोना शाएपणने समाविष्ट करीने, बंने प्रणालीओनो उद्देश्य विद्यार्थीओने व्यापक अने सारी रीते मार्गदर्शक शिक्षणो अनुभव प्रदान करवानो छे.

आ भ्यालो पर आलोचन करीने अने तेमने आधुनिक शैक्षणिक प्रथाओमां सामेल करीने, NEP 2020 नो उद्देश्य अेक सर्वग्राही अने सर्वसमावेशक शिक्षण वातावरण ऊलुं करवानो छे जे विद्यार्थीओने 21मी सदीना पडकारो माटे तैयार करे छे (Ajay Kurien, et al., 2020).

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणाली अने NEP 2020 वच्येनुं तुलनात्मक पृथक्करण असरकारक आधुनिक शैक्षणिक नीतियोने आकार आपवा माटे ऐतिहासिक ज्ञान अने प्रथाओनो समावेश करवानी सुसंगतताने प्रकाशित करे छे. मल्टीडिसिप्लिनरी अभिगम, स्वायत्तता अने कस्टमाइजेशन पर भार, रहेणांक कार्यक्रमो, कौशल्य विकासनी मान्यता अने प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणालीमांथी ज्ञानना विविध स्रोतो समकालीन समयमां शिक्षणनी गुणवत्ता सुधारवा अने सर्वग्राही विकासने प्रोत्साहन आपवा माटे मूल्यवान आंतरदृष्टि प्रदान करे छे. इतिहासमांथी शीभेला बोधपाठ पर दोरवाथी, नीति घडवैयाओ 21मी सदीमां शीभवनाओनी विविध जड़रियातोने पूरी करती सर्वसमावेशक अने प्रभावशाली शिक्षण प्रणाली बनावी शके छे.

WORKS CITED

- [1] NEP 2020, <https://www.education.gov.in/>
- [2] Urmila Yadav. "A Comparative Study Of Ancient & Present Education System," Research Gate, January 2018.
- [3] Sukanta Kumar Naskar, Sushovan Chatterjee: The Influence of Indian Ancient Educational Systems on India's Educational Strategy. 2013
- [4] Dominic Amalan .A, Dr. Surendra Chandrakant Herkal, Dr. Naveen Kumar M. Dr. Neeta Bhatt, Dr. Varsha Bapat: A Study of India's New Policy Framework for Education, Eur. Chem. Bull, 2023.
- [5] Ajay Kurien, Sudeep B. Chandramana. "Impact of New Education Policy 2020 on Higher Education," Research Gate, November 2020.